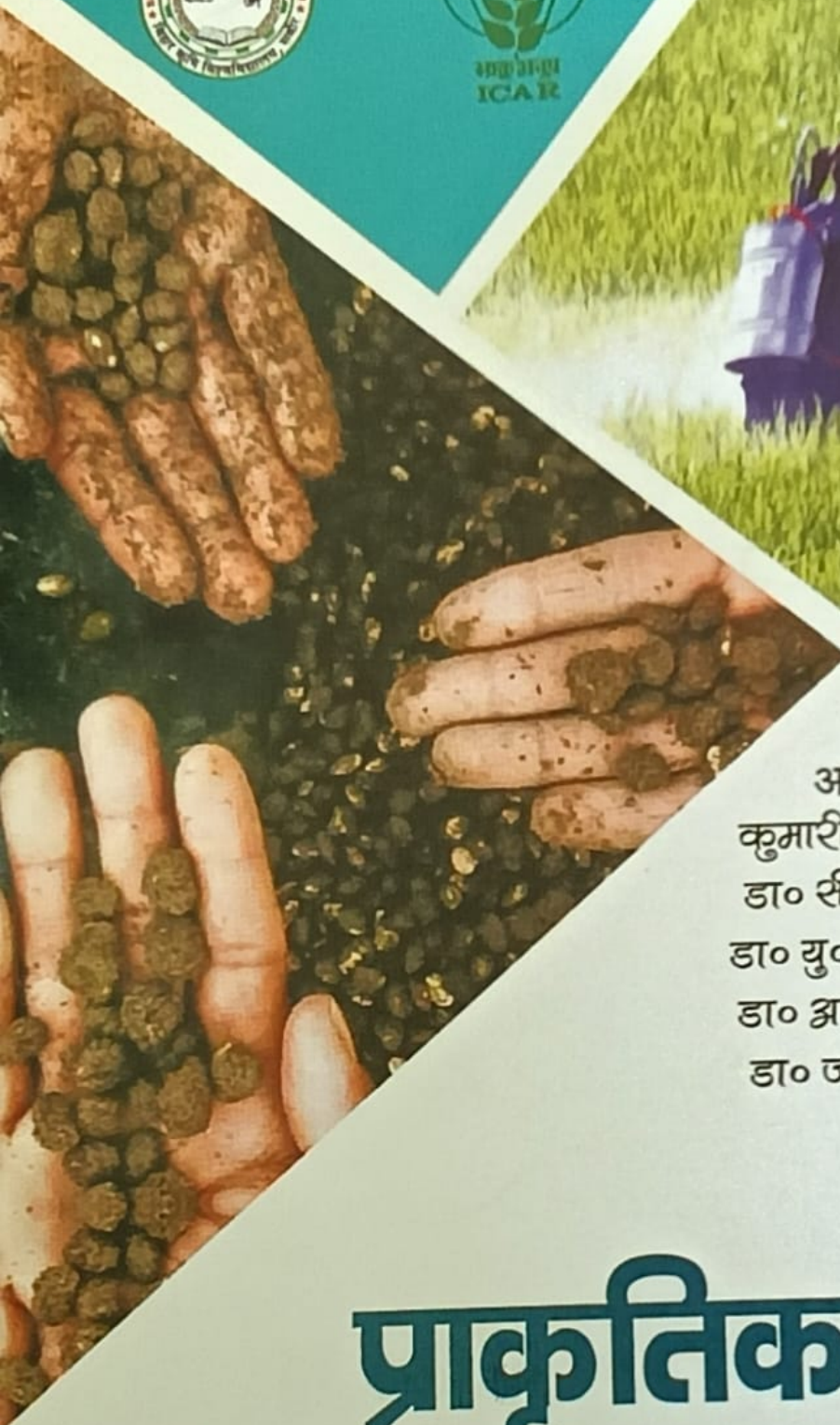




आलेख:
कुमारी विश्वा रानी
डा० सीमा कुमारी
डा० यु० एन० उमेश
डा० आरती कुमारी
डा० ज्योति सिन्हा

प्राकृतिक खेती

टिकाऊ खेती

के लिए अपनायें प्राकृतिक खेती



जीवामृत-1

आवश्यक सामग्री

20 ली. वाला मिट्टी का घड़ा

10 किलो गोबर

10 लीटर गौ मूत्र

1 किलो बेसन

1/2 किलो गुड़

पहले घड़े में 5 लीटर गौमूत्र को डाले फिर उसमें 10 किलो ताजा गोबर की अच्छी तरह मिलाएं, आधा किलो गुड़ को चूरा कर 1 लीटर गोमूत्र में मिलाकर घोल बना लें, फिर एक किलो बेसन को भी एक लीटर गोमूत्र में अच्छी तरह मिलाकर घोल बना लें। फिर दोनों घोल को घड़े में गोबर घोल में मिला दे। बचे गोमूत्र को भी मिलाकर घड़े के मुँह पर कपड़ा बांध दें। सात दिनों तक सड़ने दें। सात दिन बाद उसमें 100 लीटर पानी डाल कर अच्छी तरह मिलाएं। इसे एक एकड़ के खेत की मिट्टी में डालें। इसे अपने खेत में प्रति फसल एक बार ही प्रयोग करें। और तीन वर्षों के बाद इस बेसन घोल का उसी खेत पर प्रयोग नहीं करें। अन्य प्रकार के जीवामृत का प्रयोग ही करें।

जीवामृत-2

आवश्यक सामग्री

20 लीटर वाला मिट्टी का घड़ा

10 किलो ताजा गोबर

10 लीटर ताजा गौ मूत्र

1 किलो पका हुआ केला

1/2 किलो गुड़

10 लीटर ताजा गौ मूत्र

1 किलो पका हुआ केला

1/2 किलो गुड़

पहले घड़े में 10 किलो गोबर को डालें फिर इसमें 5 लीटर गौमुत्र को डालकर ठीक से मिलाएं। एक लीटर गोमुत्र में आधा किलो गुड़ को चूरा कर मिलाएं। फिर एक लीटर गौ मुत्र में एक किलो पका हुआ केला को भी मशल कर अच्छी तरह मिलाएं। अब दोनों घोल को घड़े में 10 किलो गोबर घोल को अच्छी तरह मिलाएं। बचे हुए गोमुत्र को भी घड़े में डाल दें। घड़े के मुंह पर कपड़ा बांध दें। फिर इसे सात दिनों तक सड़ने दें।

सात दिन बाद उसमें 100 लीटर पानी डालकर अच्छी तरह मिलाएं। इसे एक एकड़ के खेत में डालें। इसे भी प्रति फसल एक बार प्रयोग किया जा सकता है। इसे अनेक वर्षों तक प्रयोग में लाया जा सकता है।



जीवामृत-3

आवश्यक सामग्री

20 लीटर वाला मिट्टी का घड़ा

10 लीटर दही

1 किलो या दर्जन पका हुआ केला

1/2 किलो गुड़

पहले घड़े में 10 लीटर दही को डालें फिर इसमें आधा किलो गुड़ को चूरा कर मिलाएं। फिर पका हुआ केला को भी मशल कर घड़े में अच्छी तरह मिलाएं। घड़े के मुंह पर कपड़ा बांध दें। फिर इसे सात दिनों तक सड़ने दें। सात दिन बाद उसमें 100 लीटर पानी डाल कर अच्छी तरह मिलाएं। इसे एक एकड़ के खेत में डालें। इसे भी प्रति फसल एक बार प्रयोग किया जा सकता है। इसे अनेक वर्षों तक प्रयोग में लाया जा सकता है।

अमृत जल-1

सामग्री-

- 20 लीटर वाला मिट्टी का घड़ा
- 10 लीटर गौ मूत्र
- 10 किलो ताजा गोबर
- 500 ग्राम खाने वाला गुड़

बनाने की विधि

1. 10 किलो गोबर को भी घड़े में डालकर 5 लीटर गोमूत्र से घोल बना लें।
2. 1 लीटर गौ मूत्र में 500 ग्राम गुड़ को कूटकर अच्छी तरह मिला लें।
3. अब इस गुड़ के घोल को घड़े में ठीक तरह से मिला दें। बचा हुआ गो मूत्र को उसी में डाल कर मिला दें।
4. इसे अब 7 दिनों तक सड़ने दें।
5. 7 दिनों बाद इस घोल में 100 लीटर साफ पानी मिलाकर खेत के मिट्टी में छिड़कें।
6. एक एकड़ के फसल में इसे 25 दिनों के अंतराल पर छिड़काव किया जा सकता है।

नोट- इससे मिट्टी की उर्वरकता बढ़ जाती है और पौधों पर इसका उत्तम प्रभाव पड़ता है।



अमृत जल-2

सामग्री-

- 10 लीटर छाछ या मट्ठा
- 500 ग्राम खाने वाला गुड़
- 20 लीटर वाला मिट्टी का घड़ा

बनाने की विधि

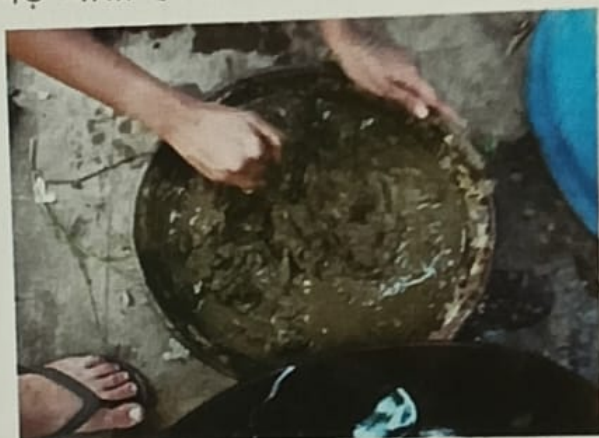
1. पहले घड़े में 5 लीटर छाछ को डालें।
2. 1 लीटर छाछ में 500 ग्राम गुड़ को कूटकर अच्छी तरह मिला लें।
3. अब इस गुड़ के घोल को घड़े में ठीक तरह से मिला दें। बचा हुआ छाछ को भी उसी में डालकर मिला दें।
4. इसे अब 7 दिनों तक सड़ने दें।
5. 7 दिनों बाद इस घोल में 100 लीटर साफ पानी मिलाकर खेत के मिट्टी में छिड़कें।
6. एक एकड़ के फसल में आवश्यकतानुसार निश्चित अंतराल पर छिड़काव किया जा सकता है।

नोट— इससे मिट्टी की उर्वरकता बढ़ जाती है और पौधों पर इसका उत्तम प्रभाव पड़ता है।

अमृत जल—3

सामग्री—

- 10 लीटर छाछ या मट्ठा
- 500 ग्राम पका हुआ केला
- 500 ग्राम खाने वाला गुड़
- 20 लीटर वाला मिट्टी का घड़ा



बनाने की विधि

1. पहले घड़े में 5 लीटर छाछ को डालें।
2. 1 लीटर छाछ में 500 ग्राम गुड़ को अच्छी तरह मसलकर मिला लें।
3. 1 लीटर छाछ में 500 ग्राम पके हुए केले को अच्छी तरह मसलकर मिला लें।
4. अब इस केले तथा गुड़ के घोल को घड़े में ठीक तरह से मिला दें। बचा हुआ छाछ को भी उसी में डाल कर मिला दें।
5. इस अब 7 दिनों तक सड़ने दें।
6. 7 दिनों बाद इस घोल में 100 लीटर साफ पानी मिलाकर खेत के मिट्टी में छिड़कें।
7. एक एकड़ के फसल में आवश्यकतानुसार निश्चित अंतराल पर छिड़काव किया जा सकता है।

नोट— इससे मिट्टी की उर्वरकता बढ़ जाती है और पौधों पर इसका उत्तम प्रभाव पड़ता है।

घनजीवामृत-1

यह भी एक प्रकार का जैविक खाद ही है।

सामग्री

1. देशी गाय का ताजा गोबर 100 किलो
2. देशी गाय का ताजा गोमूत्र 5 किलो
3. चने का आटा-बेसन 1 किलो
4. खाने वाला गुड़ 1 किलो

बनाने की विधि

एक-एक लीटर गोमूत्र में गुड़ तथा बेसन का घोल तैयार कर लें। फिर दोनों को मिला दें। गाय के ताजे गोबर के एक प्लास्टिक की पन्नी में छः इंच मोटाई में फैला लें। अब गोबर के उपर बेसन-गुड़ के घोल को भी ठीक तरह से डाल कर पूरे गोबर में मिला दें। अच्छी तरह मिलाने के बाद बोरी से ढंककर 24 घंटे के लिए छोड़ दें। 24 घंटे के बाद इसका गोइठा या थापिया बना कर छांव में सुखा लें। ठीक तरह से सूखने के बाद इसका चूरा करके प्लास्टिक बोरी में भर कर रखें। खेत में हल चलाने के बाद एक एकड़ खेत के मिट्टी में छिड़काव करें। इससे मिट्टी की गुणवत्ता और उर्वरता दोनों बढ़ जाएगी। इसे फसलों में भी यूरिया की तरह ही चूरा करके छिड़का जा सकता है। इससे पौधों को पौष्टिक आहार मिलेगा। घनजीवामृत को छः माह तक संरक्षित रखकर प्रयोग किया जा सकता है।

घनजीवामृत-2

यह भी एक प्रकार का जैविक खाद ही है।

सामग्री

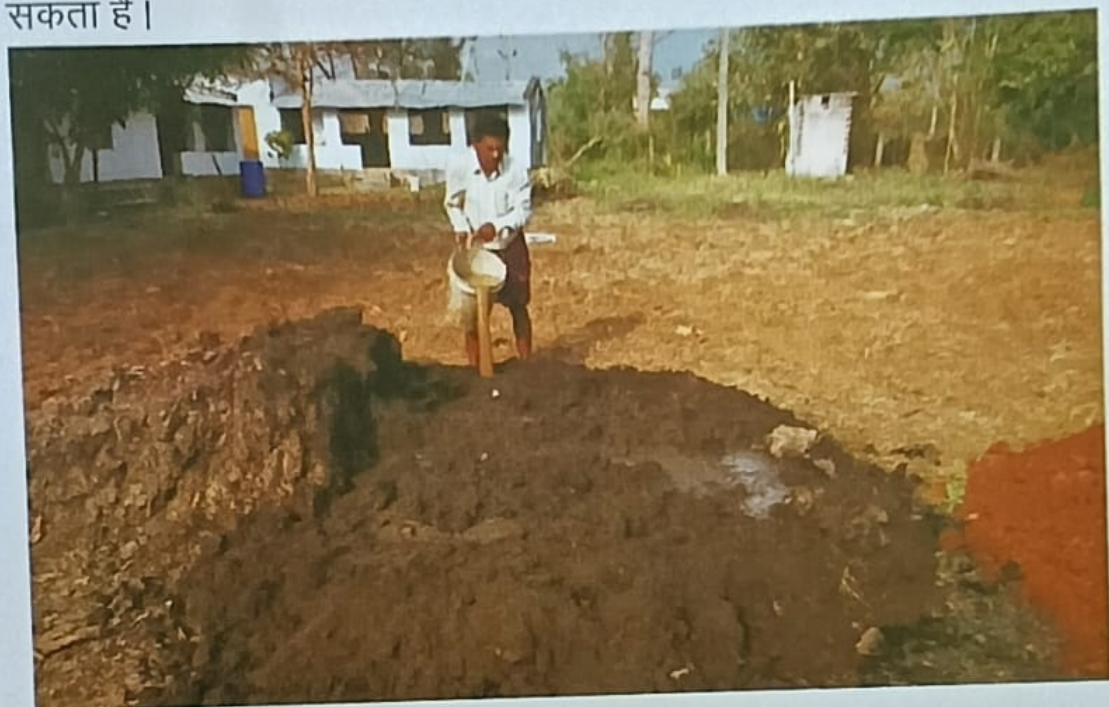
1. देशी गाय का ताजा गोबर 100 किलो
2. देशी गाय का ताजा गोमूत्र 5 किलो
3. पका हुआ केला-बेसन 1 किलो
4. खाने वाला गुड़ 1 किलो

बनाने की विधि

एक-एक लीटर गोमूत्र में गुड़ तथा केले को घोल तैयार कर लें। फिर दोनों को मिला दें। गाय के ताजे गोबर को एक प्लास्टिक की पन्नी में छः इंच की मोटाई में फैला लें। अब गोबर के उपर केले-गुड़ के घोल को भी ठीक तरह से डाल कर पूरे गोबर में मिला दें। अच्छी तरह मिलाने के बाद बोरी से ढंककर 24 घंटे के लिए छोड़ दें। 24 घंटे के बाद इसका गोइठा बनाकर छांव में सूखा लें। ठीक तरह से सूखने के बाद इसका चूरा करके प्लास्टिक बोरी में भर कर रखें। खेत में हल चलाने के बाद एक एकड़ खेत के मिट्टी में छिड़काव करें। इससे

मिट्टी की गुणवत्ता और उर्वरता दोनों बढ़ जाएगी। इसे फसलों में भी यूरिया की तरह ही चूरा करके छिड़का जा सकता है। इससे पौधों को पौष्टिक आहार मिलेगा।

घनजीवामृत को छः माह तक संरक्षित रखकर प्रयोग किया जा सकता है।



जैविक खाद – संजीवनी खाद

सामग्री— 10 किलो गोबर का राख, 1 लीटर गौ मूत्र

विधि— शाम को 10 किलो गोबर राख को 1 लीटर गौमूत्र में अच्छी तरह मिला दें, रात भर रहने दें सुबह खेत में हल चलाने के बाद एक एकड़ जमीन में छिड़क दें।

नोट— इससे जमीन में कार्बन और नाइट्रोजन का अनुपात उत्तम हो जाएगा जिससे खेत की उर्वरता बढ़ जाएगी। प्रति फसल एक बार इसका प्रयोग करना लाभदायक रहेगा।



जैविक खाद—प्रकृति खाद बायो डंग पद्धति

सामग्री—

- | | |
|---|----------|
| 1. कृषि कचरा—घास—फूस—पत्ता आदि | 1 टन |
| 2. पुराना गोबर | 2 टन |
| 3. ताजा गोबर | 20 किलो |
| 4. पानी | 100 लीटर |
| 5. 10 फीट गुना 12 फीट ठाठ का बोरा या एक प्लास्टिक | |

नोट— उपलब्धता के अनुसार पुराना गोबर कम या ज्यादा हो चलेगा, ताजा गोबर ज्यादा उपलब्ध हो तो ज्यादा घोल तैयार करके छिड़कना उचित रहेगा।

पूर्व तैयारी—

1. घास—फूस—पत्तों को डंठल से अलग करके साफ कर लें।
2. 20 किलो ताजा गोबर को 60 लीटर पानी में अच्छी तरह मिला कर घोल बना लें।

बनाने की विधि

(क)

1. किसी बड़े पेड़ के नीचे 5 फीट लंबा, 5 फीट चौड़ा जमीन को साफ और समतल कर लें।
2. इस समतल जमीन पर 5 लीटर गोबर घोल का छिड़काव करें।
3. अब इस 5 फीट की परिधि के उपर आठ इंच मोटी कृषि कचरे का परत ठीक तरह से डालें।
4. इस कचरे के उपर 10 लीटर गोबर घोल का चारों तरफ छिड़काव करें।
5. इस कचरे के उपर 4 इंच मोटी एक तह या परत, पुराने गोबर को डालें।
6. अब यह एक फीट का एक परत बन गया है इसप्रकार एक के उपर एक कुल सात या आठ बार कृषि कचरे की आठ इंच परत फिर 10 लीटर गोबर घोल का छिड़काव, फिर 4 इंच पुराना गोबर का परत डालने की क्रिया को दोहराते जाएं।
7. सभी डाल देने पर ढरे दबकर 5 फीट की उंचाई तक हो जाएगा।
8. अब इस पांच फीट उंचे ढेर को एक प्लास्टिक पॉलीथीन से अच्छी तरह ढंक दें और जमीन तथा उपर प्लास्टिक पर भारी पत्थर रख दें ताकि हवा में उड़ न जाए।
9. अब इसे 15 दिनों के लिए छोड़ दें।

(ख) 15 दिनों के बाद

1. अब फिर से 20 किलो ताजा गोबर और 60 लीटर पानी का घोल तैयार कर लें।

2. 15 दिनों बाद पन्नी को हटा दें। अब इस ढेर को फावड़े से आपस में अच्छी तरह मिलाकर बगल में रख लें।
3. 5 फीट की परिधि में 10 लीटर गोबर घोल को छिड़क लें।
4. एक माह पुराने पदार्थ को एक-एक फीट की उंचाई में डालते जाएं और प्रति परत 15 लीटर गोबर घोल का छिड़काव करते जाएं।
5. ढेर अब मात्र तीन फीट का हो जाएगा। पूर्व की ही तरह ढेर को एक प्लास्टिक चादर से अच्छी तरह ढंक दें और जमीन तथा उपर प्लास्टिक पर भारी पत्थर रख दें ताकि हवा में उड़ न जाए।

(ग) 15 दिनों के बाद

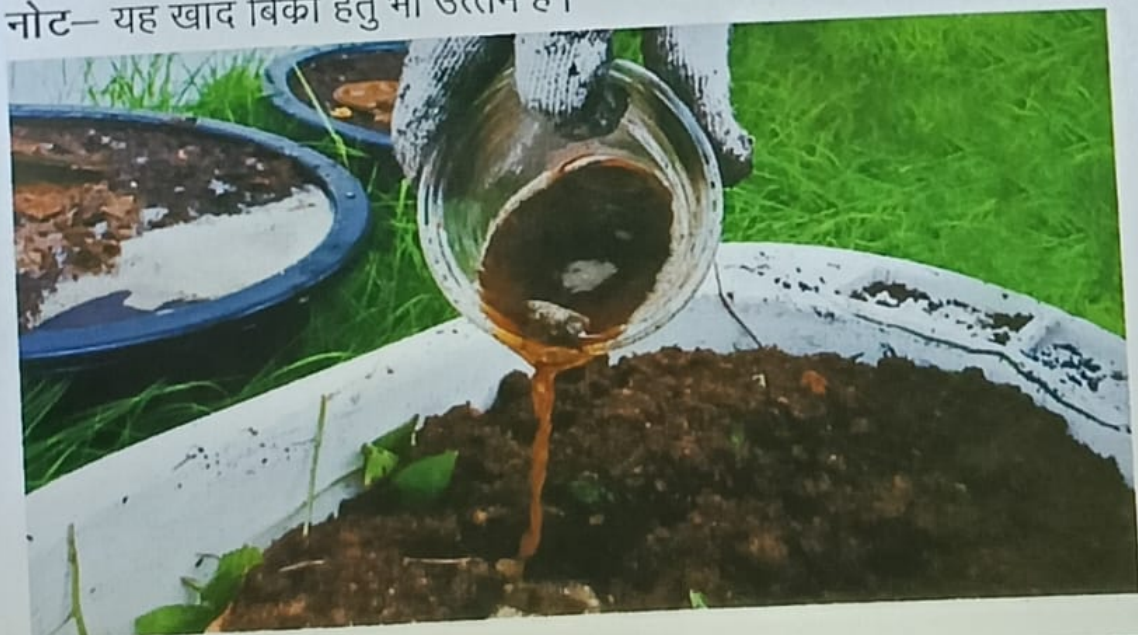
1. अब फिर से 10 किलो ताजा गोबर और 30 लीटर पानी का घोल बना लें।
2. 15 दिनों बाद पन्नी को हटा दें। अब इस ढेर को फावड़े से अच्छी तरह मिलाकर, बगल में रख लें।
3. 5 फीट की परिधि में 10 लीटर गोबर घोल को छिड़क लें।
4. एक माह पुराने पदार्थ को एक-एक फीट की उंचाई में डालते जाएं और प्रति परत 15 लीटर गोबर घोल का छिड़काव करते जाएं।
5. ढेर अब मात्र दो या ढाई फीट का हो जाएगा। पूर्व की तरह ढेर को एक प्लास्टिक पॉलीथीन से अच्छी तरह ढंक दें और जमीन तथा उपर प्लास्टिक पर भारी पत्थर रख दें ताकि हवा में न उड़ जाए।

(घ)

1. फिर से 15 दिनों बाद उपरोक्त (ग) प्रक्रिया को पूरी तरह दोहराना है। पर तीसरे बार गोबर घोल को 6-6 इंच के परत या तह में छिड़काव करना है। बाकी सभी प्रक्रिया पूर्वानुसार ही होगा।

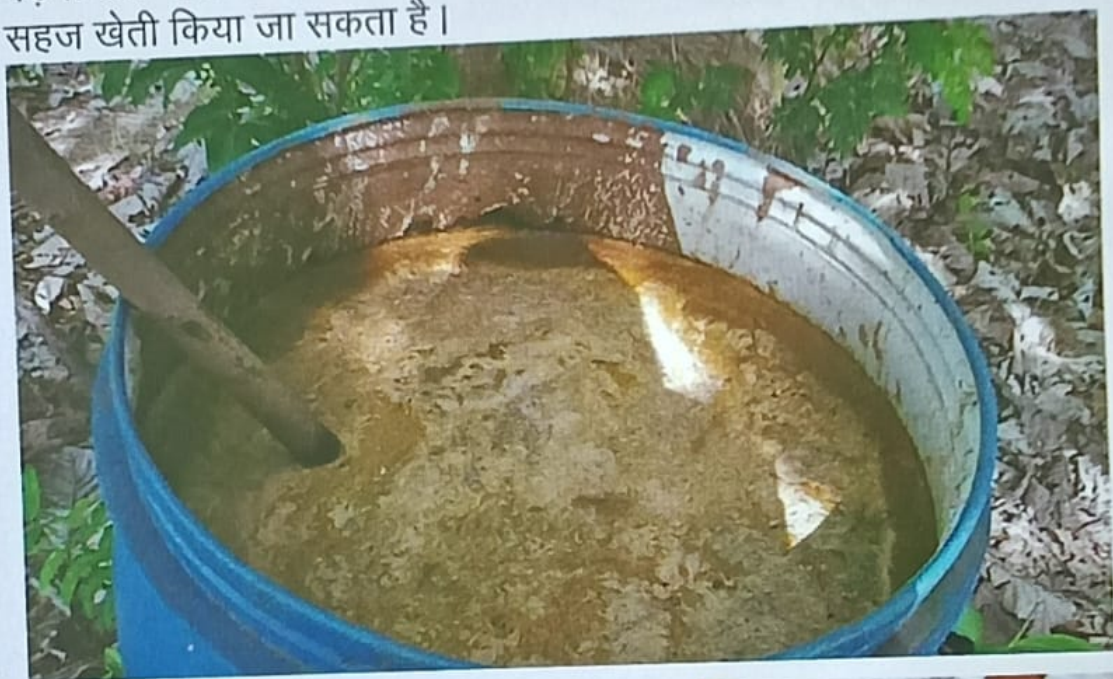
2.60 दिनों बाद पूरा ढेर उत्तम खाद बन जाएगा अब इसे अपने खेत में उपयोग कर सकते हैं।

नोट— यह खाद बिकी हेतु भी उत्तम है।



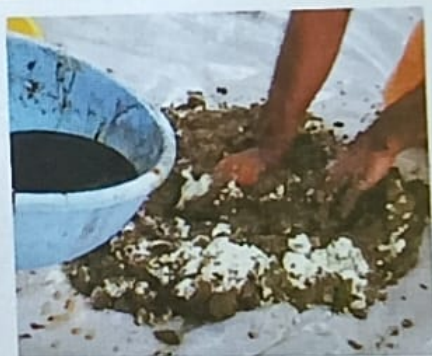
बीजामृत-1

10 किलो अनाज, दलहन, तेलहन के बीज के उपचार तथा सुरक्षा हेतु। इन दिनों किसान, बाजार से विदेशी आनुवंशिकी परिवर्तित बीज खरीदकर बहुत महंगी खेती कर रहे हैं, जिससे खेतों में कृत्रिम खाद, जहरीली कीटनाशक का प्रयोग करना अनिवार्य होता जा रहा है। जिस के कारण खेत के केंचुए, सूक्ष्मजीवों को नुकसान हो रहा है। इसलिए किसानों को अपना बीज तैयार करके रखना और उसी का बार-बार प्रयोग करते रहना उचित होगा। इससे उसे बाजार से महंगे कृत्रिम खाद और कीटनाशक, रसायन खरीदना नहीं पड़ेगा और खेत भी स्वस्थ रहेगा। अपने ही बीज को संरक्षित करके सरल और सहज खेती किया जा सकता है।



सामग्री

1. देशी गाय का ताजा गोबर 1 किलो
2. देशी गाय का ताजा गोमूत्र 1 लीटर
3. खाने वाला चुना 10 ग्राम
4. ताजा स्वच्छ जल 10 लीटर



बनाने की विधि

20 लीटर के एक बर्तन में सबसे पहले 1 किलो गोबर को 1 लीटर गोमूत्र में अच्छी तरह घोल लें फिर 10 ग्राम खाने वाले चुने को इस मिश्रण में मिला लें। अंत में 10 लीटर पानी को डालकर सभी मिश्रण को बहुत अच्छी तरह से मिलाएं। इस मिश्रण को 24 घंटे सड़ने के लिए छोड़ दें। गोबर नीचे बैठ जाएगा और उपर का रसायन साफ, पारदर्शी होगा। 24 घंटे के बाद बीज उपचार के लिए तैयार है। बीज को किसी साफ सूती धोती में बांधकर इस बीजामृत में कुछ मिनट डुबाए रखें। सरसों जैसे बीज को 30 सेकेण्ड, धान, गेहूं जैसे बीजों को 2

मिनट। इसीप्रकार सभी बीजों को उपचारित करके बोने के लिए प्रयोग करें। बीजोपचार से बीज की क्षमता बढ़ जाती है। अंकुरण से जड़ फैलाव तथा फल-फूल में उत्तम वृद्धि होती है।

यदि बीज को अगली फसल के लिए संरचित करना है तो बीज की प्रकृति के अनुसार जितनी देर डुबोकर रखना हो रखें फिर गोबर के कंड़े की राख में लपेटकर सुखा लें फिर सुरक्षित पैक कर संरक्षण कर लें। इससे लंबे समय तक बीज सुरक्षित रहेगा।

कीट नियंत्रक-1

सामग्री— 10 लीटर गौ मूत्र, 2 किलो नीम पत्ता, 20 लीटर वाला मिट्टी का घड़ा

10 लीटर गौ मूत्र, 2 किलो नीम पत्ता कूटकर मिट्टी के एक पात्र या घड़े में 21 दिनों तक सड़ने दें, 21 दिनों बाद एक कपड़े से छान लें, प्राप्त द्रव्य के एक लीटर में 10 लीटर साफ पानी अच्छी तरह मिलाकर फसल में छिड़कें। फसल या पौधों पर इसका प्रभाव 12 — 15 दिनों तक रहेगा। अपने प्रांत के मौसम के अनुसार दिन तय करें तापमान 30 डिग्री सेल्सियस के उपर होने पर 21 दिन कम होने पर 30 दिन सड़ने के लिए रखें। तापमान यदि 40 से उपर है तो 15 दिन भी पर्याप्त होगा।

कीट नियंत्रक-2

सामग्री—

20 लीटर वाला मिट्टी का घड़ा, 10 लीटर गौ मूत्र 2 किलो नीम पत्ता, 1/2 किलो बेल पत्ता 1/2 किलो धतूरा पत्ता, 1/2 किलो आँक का पत्ता

बनाने की विधि

घड़े में 10 लीटर गोमूत्र को लें, 2 किलो नीम पत्ते को कूटकर घड़े में डालें, बारी-बारी से बेल, आँक, धतूरे के पत्तों को कूटकर घड़े में अच्छी तरह मिला दें। घड़े के मुँह को कपड़े से बांधकर 21 दिनों तक सड़ने दें। 21 दिनों बाद कपड़े से छान लें, प्राप्त द्रव्य को एक लीटर में 10 लीटर साफ पानी मिलाकर फसल में छिड़कें, पूरा द्रव्य एक एकड़ के लिए पर्याप्त है। फसल या पौधों पर इसका प्रभाव 10 से 12 दिनों तक रहेगा। यह बिक्री के लिए भी उत्तम है।

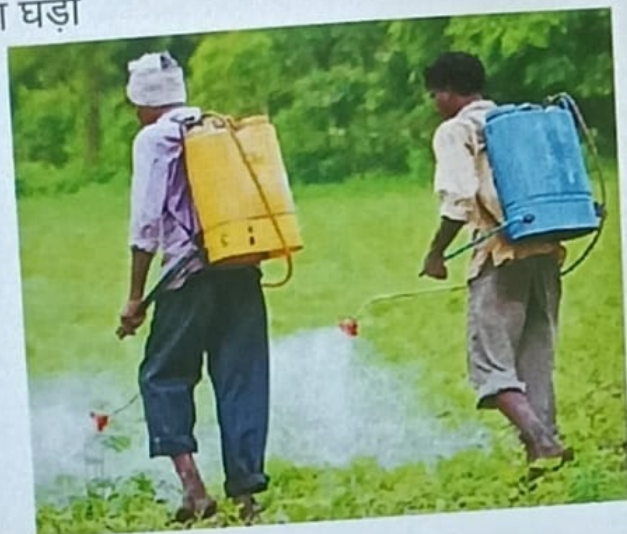
जिन खेतों में बड़े पशु या पक्षी आते हैं। वहां इसका प्रयोग उचित होगा। जैसे टिड़ियाँ, बंदर या इसीप्रकार अन्य।

नोट— अपने प्रांत के मौसम के अनुसार दिन तय करें तापमान 30 डिग्री सेल्सियस के उपर होने पर 21 दिन कम होने पर 30 दिन सड़ने के लिए रखें। तापमान यदि 40 से उपर है तो 15 दिन भी पर्याप्त होगा।

कीट नियंत्रक-3

सामग्री- 20 लीटर वाला मिट्टी का घड़ा

- 10 लीटर गौ मूत्र
- 2 किलो नीम पत्ता
- 16 किलो बेल पत्ता
- 16 किलो धतूरा पत्ता
- 1/2 किलो आँक का पत्ता
- 250 ग्राम तुलसी पत्ता
- 50 ग्राम लहसून
- 50 ग्राम हरी मिर्च



बनाने की विधि-

घड़े में 10 लीटर गौ मूत्र को लें, 2 किलो नीम पत्ते को कूटकर घड़े में डालें, बारी-बारी से बेल, आँक, धतूरे, और तुलसी के पत्तों को कूटकर घड़े में अच्छी तरह मिला दें। अब 50 हरी मिर्च और 50 ग्राम, लहसून को कूटकर मिला दें। इसे 21 दिनों तक सड़ने दें, 21 दिनों बाद एक कपड़े से छान लें, प्राप्त द्रव्य को एक लीटर में 10 लीटर साफ पानी मिलाकर फसल में छिड़कें। पूरा द्रव्य एक एकड़ के लिए पर्याप्त है। फसल या पौधों के बचाव के लिए खेत के चारों ओर मेड़ पर इसका छिड़काव करें। पर इसका प्रभाव 7 दिनों तक रहेगा।

नोट- इससे घोल और तीखा बन जाता है। बंदर या सुअर जैसे बड़े जानवरों से बचाव में उपयोग है बिक्री के लिए भी यह उत्तम है।

कीट नियंत्रक-4

सामग्री-10 लीटर गौ मूत्र, 2 किलो नीम पत्ता, 20 लीटर वाला ताम्बे का घड़ा या पात्र

बनाने की विधि

ताम्बे के पात्र में 10 लीटर गौ मूत्र लें और उसमें नीम के पत्ते को कूटकर मिला दें। इसे अब 21 दिनों तक सड़ने दें। 21 दिनों बाद एक कपड़े से छान लें, प्राप्त द्रव्य को उसी तांबे के पात्र में एक चौथाई तक उबलने दें। जब पात्र में मात्र एक-चौथाई भाग रह जाएगा तब ठंडा कर लें। एक लीटर में 100 लीटर साफ पानी मिलाकर फसल में छिड़के। फसलों या पौधों पर इसका प्रभाव 12-15 दिनों तक रहेगा। यह वास्तव में अति उत्तम कीटनियंत्रक है।



कीट नियंत्रक-5

छाछ प्रकार

आवश्यक सामग्री

1. मिट्टी का घड़ा 12 लीटर क्षमता का
2. छाछ 10 किलो—घी बनाने के बाद बचा हुआ मट्ठा
3. तांबे का टुकड़ा, कटोरा, थाली, गिलास

बनाने की विधि

घड़े में छाछ को डालें फिर उसमें तांबे को डुबाकर रखें। घड़े को कपड़े से बांधकर 7 दिन तक छोड़ दें। आठवें दिन घड़े से तांबे को निकालें और साफ करके जल को छाछ में ही डाल दें। इसमें जो गहरा नीला या हरा रंग दिखेगा वही नीला थोथा है। यह जहरीला होता है सावधानी से साफ करें और बच्चों से दूर रखें। अब 100 लीटर पानी में अच्छी तरह मिलाकर फसलों पर छिड़काव करें। इसका प्रभाव 12-15 दिन तक रहेगा।

सब्जी तथा फलदार वृक्षों के जड़ के आस-पास एक मीटर की दूरी पर मिट्टी में छिड़काव करें इससे तना छेदक, दीमक, इसीप्रकार अन्य कीट से पौधों की रक्षा होगी।

कीट नियंत्रक-6

नीम बीज: विविध प्रकार के पेड़-पौधों के लिए विविध परिस्थितियों में विविध प्रकार के कीट नियंत्रकों की आवश्यकता पड़ती है। इसलिए अनेक प्रकार के कीट नियंत्रकों का प्रयोग करना पड़ता है किन्तु इन सभी में सामान्य है गोमूत्र और नीम का फल या बीज

आवश्यक सामग्री—

- | | |
|-------------------|----------------|
| 1. मिट्टी का घड़ा | 20 लीटर क्षमता |
| 2. गोमूत्र | 10 लीटर |
| 3. नीम का फल/बीज | 1 किलो |

बनाने की विधि—

पहले नीम के बीज को कूटकर चूर्ण कर लें फिर इसे 10 लीटर गोमूत्र में मिलाकर धीमी आंच में थोड़ी देर उबालें। ठंडा होने पर छान लें फिर इसके एक लीटर में 20 लीटर पानी मिलाकर फसलों पर छिड़काव करें। इससे अनेक प्रकार के कीटों का नियंत्रण हो जायेगा। इसे फलदार पेड़-पौधों की जड़ों में भी प्रयोग किया जा सकता है जिससे दीमक, चींटियाँ नियंत्रित होगी।

कीट नियंत्रक-7

सामग्री

1. मिट्टी का घड़ा 20 लीटर

- | | |
|--------------------|----------|
| 2. गोमूत्र 10 लीटर | 2 किलो |
| 3. नीम का पत्ता | 50 ग्राम |
| 4. लहसून | 50 ग्राम |
| 5. हरा मिर्चा | |

बनाने की विधि

मिट्टी के घड़े में गोमूत्र को डाले फिर नीम पत्ते, लहसून और हरा मिर्च को पीस कर गोमूत्र में मिला दें। घड़े पर कपड़ा बांधकर 21 दिनों तक तक पकने के लिए छोड़ दें उसके बाद छानकर एक लीटर में दस लीटर पानी मिलाकर खेत के फसलों पर छिड़काव करें। इसका प्रभाव 12-15 दिनों तक रहेगा। फिर प्रत्येक 15 दिनों के बाद छिड़काव करते रहे इससे फसल कीटों से सुरक्षित रहेगा।

कीट नियंत्रक-8

सामग्री

- | | |
|-------------------|-----------|
| 1. स्टील का पात्र | 5 लीटर |
| 2. गोमूत्र | 1 लीटर |
| 3. नीम का पत्ता | 200 ग्राम |
| 4. लहसून | 10 ग्राम |
| 5. हरा मिर्चा | 10 ग्राम |

बनाने की विधि

स्टील के पात्र में गोमूत्र को डाले फिर नीम पत्ते, लहसून और हरा मिर्च को मिक्सी में पीस कर गोमूत्र में मिला दें। पात्र को ढककर 2 दिनों तक पकने के लिए छोड़ दें, उसके बाद उसी पात्र में पूरे द्रव्य को धीमी आंच पर गर्म करें जब गोमूत्र आधा रह जाय स्टोव को बंद कर दें। ठंडा होने पर छान कर रख लें। 5 मिलीलीटर द्रव्य को 1 लीटर पानी अच्छा से मिलाकर पौधों पर छिड़काव करें। इसका प्रभाव 12 से 15 दिनों तक रहेगा। फिर प्रत्येक 15 दिनों के बाद छिड़काव करते रहे इससे फसल कीटों से सुरक्षित रहेगा।

नोट— यह द्रव्य घर में, छत में और बगानों में प्रयोग के लिए उत्तम है।

कीट नियंत्रक-9

आवश्यक सामग्री

- | | |
|------------------|--------------|
| 1. तांबे का घड़ा | 12 लीटर वाला |
| 2. छाछ या मट्ठा | 10 लीटर |
| 3. लहसून | 50 ग्राम |
| 4. हरा मिर्चा | 50 ग्राम |

सबसे पहले तांबे के घड़े में छाछ को डाले फिर इसमें लहसून और हरामिर्च को पीस कर मिला अच्छी तरह दें। घड़े के मुंह पर कपड़ा बांधर 7 दिन तक सड़ने के लिए छोड़ दें। सात दिन बाद 100 लीटर पानी मिलाकर उपयोग करें।

इस रसायन से खेत के फसल में दीमक-चींटियों के प्रकोप और खर पतवार को रोकने में सहायता मिलेगी।

कीट नियंत्रक-10

सामग्री

हींग, राल, बच या गोरबच, अतीस जड़, काली मिर्च, विड़ग, भिल्लाट इन्द्रायण, सरसों और गाय के सींग के पाउडर को अच्छी तरह से मिश्रित कर इन सभी को एक सप्ताह तक गौ मूत्र में किण्वित करें। तैयार घोल को पादपों के चारों ओर छिड़काव करने से कीड़े समाप्त हो जाते हैं।



टिकाऊ खेती

के लिए अपनायेँ प्राकृतिक खेती



कृषि विज्ञान केन्द्र, हरनौत, (नालंदा)

बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर



Diksha Art & Print
+91-9431438534
ISO: 19001:2015